>

Title: Need to address the issue of irrigation in Ghazipur district of Uttar Pradesh.

श्री राधे मोहन सिंह (ग़ाज़ीपुर): सभापति जी, आपने मुझे एक ऐसे लोक महत्व के विषय पर बोलने का अवसर दिया, उसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं। चाहे इस संसद में हो या विधान सभा में हो, चाहे जिला परिषद हो, किसान और गरीब का नाम इस तरह से लिया जाता है, जैसे हम लोग जब कोई कार्य करते हैं तो ओम श्री गणेशाय नमः का नाम लेते हैं। लेकिन अफसोस की बात है कि इस समय किसान की सबसे बड़ी परेशानी यह है कि उसके खेत में उपज कैसे हो। इस बारे में संसद में कई बार चर्चा भी हो चुकी है कि देश में महंगाई बढ़ रही है, गरीबी बढ़ रही है, खाद्यान्न कम हो रहा है, उपज कम हो रही है। लेकिन उपज का मसला यह है कि यदि किसान के खेत को पानी मिले, सिंचाई के समुचित प्रबंध हो, तो निश्चित रूप से खाद्यान्न में वृद्धि हो सकती है और हमें विदेशों से गेहूं या चावल नहीं खरीदना पड़ेगा। अगर यह हो जाए तो हमारा देश अन्न के मामले में आत्मनिर्भर हो सकता है।

हमारे देश में हजारों एकड़ जमीन ऐसी है जहां सिंचाई नहीं हो रही है। अभी हमारे मित्र ने मनरेगा के बारे में अपनी बात यहां कही थी। यह बहुत गम्भीर विषय है। मैं किसी सत्ता पक्ष के नेता का नाम नहीं लेना चाहता, लेकिन इतना कहना चाहता हूं कि पहले बूढ़ा बाप अपने सहारे को खोजता था, हमें भी लगता था कि वह नौजवान घर से बाहर पंजाब और हरियाणाम में कमाने गया है। परंतु अब उस नौजवान को आपने पूर्वांचल और उत्तर प्रदेश तक ही सीमित कर दिया है और गरीब मजदूर बना दिया है। मजदूर कोई एक दिन में पैदा नहीं हुआ। वह किसान का बेटा है, उसके घर से पैदा हुआ है। अगर देश में मजदूरों को कम करना है तो आपको किसान को मजबूत करना पड़ेगा। यहां पर सलमान खुर्शीद साहब बैठे हैं, वह भी उत्तर प्रदेश से आते हैं और काफी प्रभावी नेता हैं। हमारे यहां शारदा सहायक नहर है, जो लखीमपुर खीरी से होकर गाजीपुर के टेल पर पहुंचती है। मैं कहता हूं कि मनरेगा के उस पैसे को आप नहर के टेल को पक्का करने में खर्च करा देंगे तो किसानों के खेतों तक पानी पहुंच जाएगा।

मनरेगा में कुशल और अकुशल मजदूर में कितना फर्क है, यह मैं बताना चाहता हूं। जो ईट थमाता है, वह अकुशल है और जो ईटों को जोड़ता है, वह कुशल मजदूर है। लेकिन इनमें पैसे का कोई फर्क नहीं है। इसलिए मनरेगा में पैसा व्यर्थ जा रहा है। मैं कुछ दिन पहले अपने जिले में इस बात को लेकर अनशन पर भी बैठा था। वहां किसान आंसू बहा रहा है, रो रहा है। मैं इसमें कोई राजनीति नहीं कर रहा हूं। मैं कहना चाहता हूं कि भारत आज मजदूरों का देश बनकर रह गया है। खुर्शीद जी, आप मंत्री हैं और महत्व रखते हैं। मैं आपसे हाथ जोड़कर विनती करता हूं कि इन विषयों पर ध्यान दिया जाए।

हम जब अपने प्रदेश की राजधानी लखनऊ जाते हैं, तो वहां फव्वारे चलते हुए देखते हैं और अच्छी-अच्छी बिल्डिंग्स देखते हैं। लेकिन किसानों को पानी नहीं मिलता, जिससे उनके खेत सूखे रह जाते हैं। उत्तर प्रदेश का किसान मुलायम सिंह जी के उस कार्यकाल को याद करता है, जब बिजली के सवाल पर मुख्य मंत्री मुलायम सिंह जी ने ललकार कर इस बात को कहा था कि अगर शहरों में 20 घंटे बिजली आएगी तो गांवों में 16 घंटे बिजली जरूर आएगी। आज उत्तर प्रदेश का किसान मुलायम सिंह जी की ओर देख रहा है। इस देश में मुलायम सिंह जी के बारे में मैं कह सकता हूं कि वह ऐसे मुख्य मंत्री थे, जिन्होंने जाति को गरीबी का आधार नहीं बनाया था, बल्कि गरीब को आधार माना था। अगर ऐसा नहीं किया जाएगा, तो इस देश का विकास सम्भव नहीं है। इसलिए शारदा सहायक नहर जो किसानों के हित की है, उसमें लखीमपुर से सुल्तानपुर तक 1,000 क्यूसेक पानी चलता है।

21.00 hrs.

सुलतानपुर से गाजीपुर तक उसे 700 क्यूसेक पानी मिलना चाहिए। 300 क्यूसेक पानी सुलतानपुर के लोग खर्च करते हैं। इसे अगर पक्का नहीं भी करा पा रहे हैं तो पर-किलोमीटर 20 लाख रुपये के हिसाब से 100 करोड़ रुपये खर्च होंगे, अगर आपने 100 करोड़ रुपये खर्च कर दिये तो मैं, आपको पूर्वांचल के अंदर बुलाकर माननीय मंत्री जी, शारदा सहायक नहर के किनारे जितने भी जिले हैं, वहां आपको सम्मानित करने का काम करूंगा। अगर किसान तक पानी नहीं पहुंचा तो किसान आज माफ करने के मूड में नहीं हैं, किसान गुस्से में हैं, किसान क्रोध में हैं।